# ग़ालिब के गलत अनुवाद

पल्लवी प्रसाद

मैं ग़ालिब से नहीं मिली हूं। मैं क्या, हममें से कोई नहीं मिला है। वह संसार में सन् 1797 में आए और 1869 में कूच कर गए। फिर भी वह मेरी या हमारी स्मृति में हैं- तब से जब से मैंने या हमने उन्हें पढ़ना भी नहीं शुरू किया था। हम अभी बच्चे ही थे जब दूरदर्शन पर एक सीरियल प्रसारित होना शुरू हुआ, 'मिर्जा ग़ालिब'। मिर्जा ग़ालिब बने थे मशहूर अदाकार नसीरूद्दीन शाह। देहाती बोली में कहा जाए तो सीरियल शुरू होते ही उसका 'जमीनका' यानी रिसेप्शन गीत जगजीत सिंह की पाताल से भी गहरी आवाज में बजता था, '...कहते हैं कि गालिब का है अंदाऽऽ...जे-बयां और...।' फिर किसी साज पर संगीत का एक खास टुकड़ा बजता, उफ्फ! टी.वी. रूम में जो खामोशी उतरती वह फिर वहां से उठती नहीं। ग़ालिब सिर झुकाए कोई संवाद बोलते, अपने आप से। और मैं या हम फटी-फटी आंखों से उन्हें देखा करते। ऐसी आंखें जो न समझ पाने वाले लोगों की होती हैं, वे जो समझ जाने के लिए बहुत लालायित हों। नसीर (नसीरुद्दीन शाह) साहब के प्रति मैं या हम हमेशा शुक्रगुजार रहेंगे। उन्होंने हमें ग़ालिब का किरदार दिया।

**''हैं और भी दुनिया में सुखनवर बहुत अच्छे**
**कहते हैं कि गालिब का है अंदाजे-बयां और।''**

यह ताज्जुब की बात है कि इस शे'र को देश के औसतन कम पढ़े-लिखे लोगों ने किस कदर अपने दिलों की गहराइयों में उतार लिया है। मैं खुलासा करती हूं...

दुनिया में हर जगह जैसे भूख सबको लगती है, प्यास सबको लगती है- वैसे ही प्रेम भी सबको 'लगता' है। यह हवा-पानी-खुराक की तरह ही इंसान की बुनियादी जरूरत है। प्रेम सबसे पहले पांच से 18 वर्ष की उम्र के बीच किसी न किसी रूप में सबको लग ही जाता है।

इस संक्रमण का प्रथम चरण 'लव' है। इसकी चपेट में आदमी कभी भी, कहीं भी आ जा सकता है- मसलन... गली-मुहल्ला, स्कूल-कॉलेज, बस अड्डा, रोड किनारे... कहीं भी। लव और जुकाम की तासीर मिलती-जुलती है। जुकाम होने पर आप दिन भर छींकते हैं, लव होने पर रात भर खटिया पर पड़े झींकते हैं। जिसे लव होता है, वह सिनेमा के गीत सुनता है। वह माशूक की आंखों में डूबकर गीत गाता है। इससे मरीज की तबियत को आराम मिलता है। जुकाम की तरह ही लव अपने-आप चला जाता है, अगले मौसम में फिर आने के लिए...

चूंकि हमारे यहां जुकाम जैसे मामूली मर्ज का इलाज करना तौहीन मानी जाती है, कुछ अभागों का मौसमी जुकाम निमोनिया में तब्दील हो जाता है। यानी इलाज (पढ़ें 'विसाले-यार') के अभाव में लव नासूर बन जाता है। यानी 'इश्क वाला लव'... सुर्ख वाला, सोज वाला, फैज वाला लव- निमोनिया समान घातक। सारे सिनेमाई गीत फेल! सिर्फ ग़ालिब हों सहाय...!

अजी, तसल्ली रखें! मैंने ग़ालिब का हाथ कसकर थामा हुआ है। मेरी बात पूरी होने तक वह हमारे पहलू से उठकर कहीं नहीं जा पाएंगे। हां, तो गहरे इश्क को गहरे लफ्जों कर बयान चाहिए। जो अब तक गली-नुक्कड़ों, मॉल पर आवारा भटकते थे ऐसे लड़के धीर चित्त हुए किताबों ओर इंटरनेट से उतारे ग़ालिब के शे'र रटते हैं, उनके अर्थ समेत। ये स्थानीय लड़के और उनकी स्थानीय माशूकाएं... जान लें ये लोग देश में कहीं के भी हो सकते हैं- पंजाब, उड़ीसा, महाराष्ट्र, गुजरात, बिहार, बंगाल, तेलंगाना... आप अपने मन में राज्यों की लिस्ट का मनन कर लें। मौका पाते ही स्थानीय प्रेमी अपनी स्थानीय प्रेमिका की राह 'छेक' कर अपने खास स्थानीय लहजे में ग़ालिब का शे'र पढ़ता है। वह इस बात से सर्वथा अंजान है कि ग़ालिब ने वह शे'र बरतानिया सरकार के लिए लिखा था, न कि किसी माशूक के लिए।

खैर, लड़की लरजते कलेजे से उस शे'र को सुनती है। वह लड़के से भी कम उर्दू जानती है। लेकिन न जाने कैसे और कब से वह ग़ालिब के मायने समझती है। वह समझती है कि उसकी शान में 'ग़ालिब' को पढ़ने वाला प्रेमी उससे लव नहीं, इश्क करता है- 'ईऽऽ...श्क!'

कभी-कभी किन्हीं कस्बों से लेकर महानगरों तक मिलने वाली बहुत ही कमसिन बालाओं का उर्दू ज्ञान यूं सिफर होता है कि वे 'इकरार' शब्द को 'फोर लेटर वर्ड' समझती हैं (चार अक्षर तो हैं ही)। वे डरती हुईं चुपके से अपनी सहेलियों से इसका अर्थ पूछती हैं। ग़ालिब, जिनके कायल देश-दुनिया के उर्दू-हिंदी-फारसी... और अन्य जुबानों के बड़े-बड़े विद्वान हैं, उनके बारे में मैं किन मामूली लोगों की राय बता रही हूं। आप यही सोच रहे हैं न! लेकिन मैं क्या करूं? ग़ालिब जैसे 'कहने वाले' की शान में कुछ कहने के लिए मेरे पास शब्द कम पड़ जाएंगे। मेरी कलम पंगु हो जाएगी। मेरे दिल में जज्बे जोर मारते रह जाएंगे। डेढ़ सौ वर्ष से उनकी शान में पढ़े गए कसीदों का क्या मैं मुकाबला कर पाऊंगी? मैं नाकाबिल हूं।

इसलिए मैं इस देश की गर्द-भरी अवाम, जिसमें मैं खुद भी शामिल हूं, का जिक्र कर रही हूं। वे जो सुरुचि और नफासत के लिए नहीं जाने जाते, जिनके लिए उर्दू लिखना-पढ़ना मुश्किल है, अंग्रेजी भी। वे करोड़ों लोग जो ग़ालिब के हर लफ्ज का ठीक-ठीक अर्थ नहीं जानते, फिर भी उनके अशआर के भाव अपने जीवन में पहचानते हैं। वे जो 'पी' नहीं पाते 'सोख' जाते हैं।

ग़ालिब के इस 'फैन' देश की राजधानी दिल्ली में 'ग़ालिब की हवेली' खड़ी है- गली कासिम जान, बल्लीमारान, चांदनी चौक, पुरानी दिल्ली। उनकी हवेली का पता भी कितना दिलकश है! यहां ग़ालिब अपने परिवार के साथ किराए पर रहा करते थे। आज उनकी हवेली के आधे हिस्से में उनका स्मारक है और आधे में एक पी.सी.ओ.। कुछ दिनों पहले तक वहां लकड़ी और कोयले की टाल भी हुआ करती थी। मुझे इस बात की बहुत खुशी है कि वहां कोई 'शो रूम' या 'मॉल' नहीं, कोयले की टाल थी। मैं जानती हूं इस बात से ग़ालिब भी खुश होंगे।

दु:ख कोई और है। वह दु:ख जिसे साझा करने के लिए, उसकी दवा करने के लिए यह सब लिखा जा रहा है। ग़ालिब की हवेली की दीवारों पर लंबी-चौड़ी तख्तियां मढ़ी हुई हैं जिन पर ग़ालिब के कई अशआर लिखे हुए हैं। उन्हीं अशआर के नीचे उनके अंग्रेजी अनुवाद दर्ज हैं। इनमें से कई अनुवाद बुरे ही नहीं सरासर गलत हैं। कुछ यूं गलत, कि यदि हम मान लेते हैं कि इंसानों की मौत के बाद उनकी रूहें बहुभाषीय हो जाती हैं तो ग़ालिब इन अनुवादों को पढ़ने पर अपने अशआर खुद नहीं पहचान पाएंगे।

वे अशआर, अनुवाद और उन पर चर्चा पाठकों के पेशे-नजर है :

शे'र :

**''उग रहा है दर-ओ-दीवार पे सब्जा ग़ालिब**
**हम बयाबां में है और घर में बहार आई है''**

दिया अनुवाद :

**''DILAPIDATED WITH PLANTATION ARE THE WALLS OF MY HOUSE, GHALIB**
**THEY SAY WHAT A SCENE BUT FOR ME**
**IT'S NO MORE THAN A FOREST GLIB''**

उपरोक्त अनुवाद में **DILAPIDATED, PLANTATION, THEY SAY WHAT A SCENE, FOREST, GLIB** इन शब्दों का अनुचित प्रयोग है। **DILAPIDATED** = जर्जर - इस शब्द का कोई सीधा संदर्भ मूल शे'र में नहीं। **PLANTATION** = 'लगाया' हुआ पौधा, खेत, वृक्ष - 'सब्जा' के लिए यह शब्द उपयुक्त नहीं। **THEY SAY WHAT A SCENE** = वे कहते हैं क्या दृश्य है - यह न भाव, न शब्दों में मूल शे'र में मौजूद है। **FOREST** = जंगल - यह शब्द बयाबां के लिए उपयुक्त नहीं। बयाबां किसी निर्जन स्थान को कहते हैं, वह स्थान कोई भी हो सकता है, सहरा भी। **GLIB** बोलने में कुशल/वाक्पटु - अनुवाद में **GLIB** शब्द का प्रयोग अनर्थ पैदा कर रहा है।

अनुवाद की दूसरी पंक्ति **THEY SAY WHAT A SCENE BUT FOR ME IT'S NO MORE THAN A FOREST GLIB** का अर्थ है :

वे कहते हैं क्या दृश्य है, लेकिन मेरे लिए यह एक वाक्पटु(?) जंगल से ज्यादा नहीं। आप देख सकते हैं कि कैसे इस शे'र का यह अंग्रेजी अनुवाद घोर अनर्थ पैदा करता है, हास्यास्पद तो यह है ही।

बेहतर अनुवाद :

**''WEED GROWS UPON YOUR**

**DOORS AND WALLS, GHALIB**
**YOU WALK THE WILDERNESS WHILE**
**IT IS SPRING IN YOUR HOME''**

...

शे'र :

**''बस के दुश्वार है हर काम का आसां होना**
**आदमी को भी मयस्सर नहीं इंसां होना''**

दिया अनुवाद :

**''HOW DIFFICULT IT IS FOR**
**A TASK BE SIMPLIFIED**
**LOAD OF WORK HAS NOT**
**LET ME LIVE LIKE A MAN''**

अनुवाद की प्रथम पंक्ति में अंग्रेजी गलत लिखी गई है। **FOR A TASK** के साथ **TO BE SIMPLIFIED** आना चाहिए या **THAT A TASK** के साथ **BE SIMPLIFIED** आना चाहिए।

**LOAD OF WORK** = कार्य-बोझ - इसका मूल शे'र में न शब्दों में, न भाव में प्रयोग हुआ है। यानी 'कार्य-बोझ ने मुझे इंसां की तरह जीने न दिया' जैसी बात मूल शे'र में कहीं नहीं कही गई है।

बेहतर अनुवाद :

**''LIKE IT IS**
**DIFFICULT THAT THE**
**WORLDLY TASKS BE EASY,**
**SO IT IS FOR A MAN**
**TO AVAIL BEING HUMAN''**

...

शे'र :

**''हजारों ख्वाहिशें ऐसीं कि हर ख्वाहिश पर दम निकले**
**बहुत निकले मेरे अरमान फिर भी कम निकले''**

दिया अनुवाद :

**''THERE ARE**
**THOUSAND AND ONE DESIRES**
**EACH IN ITSELF GREAT**
**THOUGH MANY A WISH IS FULFILLED**
**SOME WE LEAVE TO ABATE''**

**THOUSAND AND ONE** = एक हजार एक - यह निश्चित आंकड़ा है। ग़ालिब ने यह नहीं कहा। कहा है, 'हजारों ख्वाहिशों के बारे में। **GREAT** = महान - यह मूल शे'र के शब्दार्थ को पकड़ नहीं पाता।

बेहतर अनुवाद :

**''THOUSANDS OF DESIRES SUCH AS EACH TAKES**
**MY BREATH AWAY**
**MANY WERE FULFILLED AS MANY MORE**
**UNFULFILLED STAY''**

...

शे'र :

**''कहूं किससे मैं कि क्या है, शबे-गम बुरी बला है**
**मुझे क्या बुरा था मरना जो एक बार होता''**

दिया अनुवाद :

**''THE NIGHT OF SUFFERING AWAY FROM YOU**
**IS DYING MANY DEATHS IN A ROW**
**I'll GLADLY WELCOME DEATH, FOR IT WOULD**
**STRIKE ONCE, THEN NO MORE''**

**AWAY FROM YOU** = तुमसे दूर - यह भाव में और शब्दों में मूल शे'र में मौजूद नहीं। इसके अनुवादक को भी नुक्कड़ वाले प्रेमी की तरह शुबहा हो गया है कि ग़ालिब सिर्फ माशूक के लिए लिखते थे। **IS DYING MANY DEATHS IN A ROW** = कई मौतें लगातार मरने के बराबर। ग़ालिब ने सिर्फ इतना कहा है कि शबे-गम बुरी बला है। वह यह नहीं कहते कि तुमसे दूर वियोग में कटी शबे-गम कई मौतें लगातार मरने के बराबर है। बिलकुल नहीं। दूसरी पंक्ति में ग़ालिब के कथन का अर्थ है, उन्हें मौत बुरी नहीं लगती यदि वह एक ही बार आती (मतलब उन्हें बार-बार मौत आती है।) इससे उल्टा, अनुवादित पंक्ति का मतलब निकलता है कि मैं खुशी से स्वागत करूंगा मौत का, क्योंकि वह एक ही बार आएगी, फिर नहीं। 'टोटल हायजैक!'

बेहतर अनुवाद :

**''IN WHOM SHOULD I CONFIDE,**
**THE BANE OF SORROWFUL NIGHTS**
**I WOULD NEVER**
**MIND DEATH,**
**IF IT CAME BUT ONLY**
**ONCE''**

...

शे'र :

**''न था कुछ तो खुदा था, कुछ न होता तो खुदा होता**
**डुबोया मुझको होने ने, न होता मैं तो क्या होता''**

दिया अनुवाद :

**''O MAKER THOU**
**WERT, WHEN NOTHING**
**WAS MADE**
**THOU WILL BE WHEN**
**NOTHING ELSE IS**
**SO WHAT HAVE I GAINED FROM THINE DECREE**
**THAT I BE ME, NOT THEE?''**

इस अनुवाद में 'डुबोया मुझको होने ने' को शब्दों और भाव से बिलकुल हटा दिया गया है। **O WHAT HAVE I GAINED FROM THINE DECREE** = तो मुझे क्या मिला तुम्हारे फैसले से - ऐसे किसी प्रश्न का भाव या शब्द-समूह नहीं है मूल शे'र में। **THAT I BE ME, NOT THEE** - यह शब्दार्थ व भावार्थ में गलत है।

बेहतर अनुवाद :

**''WHEN THERE WAS NOTHING, THERE**
**WAS GOD**
**HAD THERE BEEN NOTHING, GOD WOULD BE**
**MY EXISTENCE WHELMS ME**
**WHAT DIFFERENCE BE, SHOULD I NOT BE?''**

...

शे'र :

**''कोई मेरे दिल से पूछे तेरे तीरे-नीमकश को**
**ये खलिश कहां से होती जो जिगर के पार होता''**

दिया अनुवाद :

**''I AM GLAD YOU SHOT YOUR ARROW**
**WITH THE BOW ONLY HALF BENT**
**FOR YOU THE SHOT MAY HAVE BEEN IN**
**VAIN BUT IT BROUGHT ME EXQUISITE PAIN''**

**I AM GLAD** = मैं खुश हूं - यह न भाव, न शब्दों में मूल शे'र में मौजूद है। **FOR YOU THE SHOT MAY HAVE BEEN IN VAIN** = तुम्हारे लिए यह निशाना शायद बेकार रहा - ऐसी कोई बात मूल शे'र में कहीं नहीं कही गई है। **THE BOW ONLY HALF BENT** = सिर्फ आधे झुके धनुष से - यह अनर्थ है। तीरे-नीमकश का मतलब टेढ़ा/झुका तीर है, धनुष नहीं! जिगर के पार होता - इस बात को अनुवाद में न भाव, न शब्दों में शामिल किया गया है। इतना ही नहीं, ग़ालिब ने 'तीरे-नीमकश' को होने वाली खलिश का जिक्र किया है, दिल में होने वाले दर्द या खलिश की बात नहीं कही है। इतने बुरे अनुवाद से ऐसे सूक्ष्म भाव को पकड़ पाने की अपेक्षा हम कर भी कैसे सकते हैं?

बेहतर अनुवाद :

**''ASK MY HEART,**
**YOUR ANGLED ARROW THAT LODGES THERE IN VAIN,**
**IF IT HAD PASSED THROUGH**
**HOW SHOULD IT HAVE THROBBED IN PAIN''**

यहां **HOW SHOULD IT HAVE...** में जो '**IT**' है वह **ARROW** के लिए है, हालांकि वह **HEART** के लिए भी समझा जा सकता है। इस लिहाज से यह एक चालाक अनुवाद है।

...

शे'र :

**''कोई वीरानी-सी वीरानी है**
**दश्त को देख कर घर याद आया''**

दिया अनुवाद :

**''I WONDER IF ANY WILDERNESS WOULD BE MORE DESOLATE THAN THIS**
**AND I REMEMBERED ANOTHER OF THE KIND**
**THE HOME I HAD LEFT BEHIND''**

**I WONDER** = मैं सोचता हूं - यह भाव या शब्द मूल शे'र में नहीं है। **ANOTHER OF THE KIND** = इसी तरह का दूसरा - यह भाव या ऐसे शब्दों का मूल शे'र में प्रयोग नहीं है। **THE HOME I HAD LEFT BEHIND** = वह घर जो मैंने पीछे छोड़ दिया था - ग़ालिब घर को पीछे छोड़ने का कोई बयान नहीं दे रहे।

बेहतर अनुवाद :

**''THERE IS DESOLATE WILDERNESS, A FOREST**
**THAT REMINDS ME OF MY HOME''**

...

शे'र :

**''हरचंद सुबुक-दश्त हुए, बुतशिकनी में हम हैं**
**तो अभी राह में हैं संग-ए-गिरां और''**

दिया अनुवाद :

**''IN THIS EXACTING, TIRESOME LIFE**
**THE CHORES AND STINTS NEVER END**
**I HAVE BROKEN ALL STONES ASSIGNED TO ME**
**TILL I HAVE ROUND THE BEND''**

यह अनुवाद घोर अनर्थ पैदा करता है। **IN THIS EXACTING, TIRESOME LIFE THE CHORES AND STINTS NEVER END** = इस श्रमसाध्य कष्टकर जीवन में जहां काम और उनकी अवधि खत्म नहीं होते - दूर-दूर तक ग़ालिब ने ऐसा कुछ नहीं कहा है। **HAVE BROKEN ALL STONES ASSIGNED TO ME TILL I HAVE ROUND THE BEND** = मैंने मुझे दिए गए सारे पत्थर तोड़ डाले हैं, अगले मोड़ तक! - तौबा! ग़ालिब ऐसा कुछ नहीं कह रहे। ग़ालिब जो कह रहे है, उसका हिंदी में कुछ यूं अर्थ होता है : हालांकि हम बुत/पत्थर तोड़ने में बहुत फुर्तीले रहे हैं, अभी भी राह में हैं पत्थर/अड़चनें और।

बेहतर अनुवाद :

**''I MAY HAVE BEEN THE MOST NIMBLE ICONOCLAST**
**STILL, THERE LIE MANY**
**OBSTRUCTIONS IN MY PATH''**

...

शे'र :

**''इश्क मुझको नहीं, वहशत ही सही**
**मेरी वहशत तेरी शोहरत ही सही''**

दिया अनुवाद :

**''THOUGH I MAY BE MADLY IN LOVE WITH YOU**
**DO NOT CALL IT MADNESS AND FROWN**
**AND SHOULD IT BE MADNESS, DON'T FORGET**
**IT BROUGHT YOU YOUR RENOWN''**

देखिए, यह अनुवाद अपने मूल शेर से दुगुना लंबा है। आइए पढ़ें कि यह अनुवाद कहता क्या है : हालांकि मैं तुम्हें वहशत से प्यार करता हूं, तुम इसे वहशत न बुलाओ और त्यौरियां न चढ़ाओ। और यदि यह वहशत भी हो तो यह न भूलो कि इसने तुम्हें शोहरत दी है। क्या ग़ालिब यह कह रहे हैं? इन्हीं शब्दों में? त्यौरियां **(FROWN)** कहां से आ गया?

बेहतर अनुवाद :

**''NOT LOVE, IT MAY BE MY MADNESS**
**MY MADNESS MAY BE YOUR RENOWN''**

...

शे'र :

**''तेरे वादे पे जिए हम, तो ये जान झूठ जाना**
**के खुशी से मर न जाते अगर एतबार होता''**

दिया अनुवाद :

**''IT WAS YOUR PROMISE THAT KEPT ME ALIVE**
**THOUGH IT WAS ALL LIES**
**FOR HAD I TRUSTED IT AS TRUTH**
**IN SHEER JOY I WOULD HAVE DIED''**

ग़ालिब के शब्दों 'तो ये जान' को अनुवादक ने बिलकुल छोड़ दिया है जिसके चलते अर्थ में गड़बड़ी आ गई है। **THOUGH IT WAS ALL LIES** = हालांकि वह सब झूठ था (तेरा

वादा) - ऐसा ग़ालिब नहीं कह रहे। ग़ालिब कह रहे हैं : तेरे वादे पे जिए हम, तो ये जान, (तूने) झूठ जाना। ग़ालिब वादों को झूठ या सच नहीं बता रहे। वह उन पर ऐतबार करने या न करने की बात कह रहे हैं।

बेहतर अनुवाद :

**''I LIVED ON YOUR WORD-**
**KNOW THIS, YOU THINK WRONG.**
**WOULD NOT I DIE OF HAPPINESS**
**IF I BELIEVED YOU?''**

...

शे'र :

**''लताफत बे-कसाफत जल्वा पैदा कर नहीं सकती**
**चमन जंगार है आईना-ए-बाद-ए-बहारी का''**

दिया अनुवाद :

**''AS THY SOUL NEEDED THINE BODY**
**TO SHOW IT'S BEAUTY RARE**
**THE SUBTLE SCENTED BREEZE LIKEWISE,**
**THE GARDEN'S HUES DOTH WEAR''**

इन्होंने अनुवाद में ख्वामखाह **THY** और **THINE** मचा रखी है। ग़ालिब कुछ कह रहे हैं, अनुवाद कुछ और। ग़ालिब जो कह रहे हैं उसका हिंदी में कुछ यूं मतलब निकलता है : जैसे स्वाद को चिकनाई चाहिए जल्वा पैदा करने के लिए, वैसे ही बगीचे को वसंत-ऋतु का दर्पण चाहिए। अनुवाद कह रहा है : जैसे आत्मा को शरीर की जरूरत है अपनी खूबसूरती दिखाने के लिए, वैसे ही खुशबूदार हवा को बगीचे की रंगतें पहनती हैं।

बेहतर अनुवाद :

**''LIKE FLAVOURS WITHOUT FAT,**
**DO NOT ANY CHARM BRING**
**SO THE BEAUTY OF GARDEN NEEDS THE**
**MIRROR OF SPRING''**

...

वाह! देखा आपने? इसे कहते है ईंट का जवाब पत्थर। मार पत्थर (अनुवाद) तमाम ईंटें (अशआर) फोड़ डालीं। वे चूर पड़ी हैं। ये गलत अनुवाद जाहिर करते हैं कि मिर्जा ग़ालिब के हमवतन, उन्हें जानने-समझने, पढ़ने या लिखने की तमीज नहीं रखते। 'ग़ालिब की हवेली' देखने देश और दुनिया-जहान से हर साल लाखों सैलानी आते हैं। 'ग़ालिब की हवेली' राष्ट्रीय धरोहर घोषित है। जाहिर है कि इसकी देख-रेख सरकार करती है। सरकार ने इन अनुवादों को अमरत्व दान देने से पहले क्यों इनका कोई वाजिब मूल्यांकन या संपादन नहीं कराया? क्या इसके लिए उनके पास कोई काबिल प्रक्रिया है भी या नहीं?

सरकार की छोड़ें। देश का विद्वान बुद्धिजीवी वर्ग- जो 'बांग' देते नहीं थकता, वह कहां गया? कितने ही बुद्धिजीवी/विद्वान/प्रोफेसर घूम-घूमकर हर बार यहां लौटते हैं। कई अपने विद्यार्थियों और शागिर्दों के हुजूम के साथ 'स्टडी टूर' और 'हिस्टोरिकल टूर' के मजे उठाते हैं। क्या छठवें-सातवें (उम्मीद से) वेतन आयोग की चर्बी से उनके पपोटे इतने भारी हो गए हैं कि उन्हें दिखाई देना बंद हो गया है? वे जो शायद यह सब पढ़ रहे हैं और मेरे द्वारा दी गई, 'लव जोड़ों' की मिसाल पर कुढ़ रहे हैं वे बताएं, वे किस मायने में कम हैं- उर्दू की टांग तोड़ने वाले और लड़की के सामने 'रेघा' कर, हकलाकर ग़ालिब को पढ़ने वाले छोकरों से? कम से कम ग़ालिब उन आशिकों के हमसाज तो हैं।

काश, बुद्धिजीवियों को ग़ालिब की बद्दुआ या दुआ लग जाए- इंशा अल्लाह! उन्हें भी 'इश्क' हो जाए। कभी वे अपने दिमाग को आराम दें और दिल से भी काम लें। काश, वे दुबारा पढ़ें- डिग्री, नौकरी, पदोन्नति, शोध-प्रकाशन या शोहरत के लिए नहीं... अपने 'इश्क' के लिए। जुबानों से इश्क, साहित्य से इश्क, शाइरों-लेखकों से इश्क... इश्क ही इश्क!

बहरहाल, इस लेख की यही मंशा है कि सियासत में बैठे लोग और अवाम ग़ालिब के गलत अनुवादों के मामले से वाकिफ हों और इनके सुधार के लिए जल्द से जल्द कदम उठाए जाएं। एक और गुजारिश है कि आप हर 'मढ़ी और जड़ी' चीज को सच न मान लें। उन्हें खोजी निगाहों से देखें-परखें।

चलते-चलते, हो सकता है कुछ लोगों को मेरा दिया कोई संदर्भ कमतर प्रतीत हुआ हो। उनसे मैं मुआफी मांगना चाहूंगी। लेकिन उनके लिए ग़ालिब को ही उद्धृत करूंगी :

**''सौ कोस से बा-जबान-ए-कलम बातें किया करो**
**और हिज्र में विसाल के मजे लिया करो''**

...

**लेखिका कथाकार योगेंद्र आहूजा के प्रति विशेष आभारी है कि उन्होंने 'ग़ालिब की हवेली' और वहां प्रदर्शित शे'रों की तस्वीरें साझा कीं।**

❖❖❖

ए-8, शिवा होम्स जी.टी.एम, मिल्स
हिसार रोड, सिरसा-125005, हरियाणा
मो. : 08221048752